दैनिक जागरण झंकार की प्रस्तुति
रविवार, 24 नवंबर 2019

यात्रा

www.jagran.com

केरल के यादगार स्वाद

2

पंछी बन उड़ते चलें ...

3

साथी सफर के...

फ्रेंड जोन में चले जाते हैं

हम जब घूमते हैं तो पति–पत्नी की आम जिंदगी से थोड़ा ब्रेक मिलता है। हम फ्रेंड जोन में चले जाते हैं। जिंदगी में क्वालिटी आ जाती है। हमारा घूमना एक टूरिस्ट की तरह नहीं होता। हम ट्रैवलर की तरह जाते हैं। कम से कम खर्च और ज्यादा से ज्यादा समय का उपयोग हमारी प्राथमिकता रहती है। हमें सस्ते इंतजाम करने होते हैं। हम होमस्टे या ओयो रूम्स लेते हैं। कोशिश रहती है कि 500 से 1000 रुपये के बीच रात बिता लें। ट्रैवल हमारी जिंदगी का हिस्सा बन चुका है। हम ज्यादा खर्च करेंगे तो हमारा घूमना कम हो जाएगा। फुल टाइम जॉब के साथ हम घूमते भी हैं। मैं स्किल डेवलपमेंट में काम करती हूं और मनीष एविएशन सेक्टर में हैं। हमारी योजना है कि 2020 तक पूरा भारत देख लें, क्योंकि भारत में ही बहुत जगहें हैं देखने की।

गार्गी
दो घुमक्कड़ (गार्गी-मनीष कुमार झा)

छोटी–छोटी चीजें ढूंढ़ते हैं

हनीमून के बाद ही हमने फैसला कर लिया था कि हम साथ में घूमने के बारे में लिखें। निराली को फैशन का शौक है। वे जूलरी, स्टाइल आदि के बारे में भी लिखना चाहती थीं, तो उसे भी हमने इसमें शामिल किया। इस तरह से 'जिप्सीकपल' बना। हमारा घूमने का तरीका भी अनोखा ही है। हम लोग एक लिस्ट बनाकर घूमने नहीं जाते हैं। उस जगह के इतिहास और संस्कृति के बारे में पढ़ लेते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है कि हम उसी जगह तक सीमित रहें। ऐसा भी हो सकता है कि हम लिस्ट में न होने वाली किसी छोटी–सी जगह को पसंद करें और वहां जाकर लंबा वक्त बिताएं या फिर हम किसी बगीचे में समय बिता दें। हम अपनी तरह से घूमते हैं। हम चाहते हैं कि हमारी कहानियों में नई चीजें मिलें। हम छोटी–छोटी चीजों को एंजॉय करते हैं। घूमना एक एक्टिविटी है, जो हम साथ कर रहे हैं।

रिषभ शाह, जिप्सीकपल (रिषभ शाह-निराली शाह)

यूरोपीय देशों में बच्चे के साथ घूमना आसान

शुरू में हम बहुत डरते थे स्विट्जरलैंड की सर्दी से, क्योंकि छह महीने की बच्ची साथ थी, लेकिन मुझे लगता है कि यूरोपीय देशों में बच्चों के साथ घूमना कहीं अधिक आसान होता है। साफ वॉशरूम्स होते हैं, डाइपर चेंज करने का कमरा होता है। स्ट्रॉलर फ्रेंडली सड़कें होती हैं। बच्चे के साथ होने पर लोग बहुत इज्जत करते हैं। लोग सपोर्टिव हैं। अब बेटी पांच साल की हो गई है। आजकल हम बच्चे के साथ देख सकने वाली जगहों पर जाते हैं। हम दोनों को ऐतिहासिक जगहें पसंद आती हैं। प्रकृति से रूबरू होना भी अच्छा लगता है।

रश्मि पंडित
गोबियोंडबाउंड्स (रश्मि पंडित-चालुक्य मोहनराज)

ट्रैवल ब्लॉगर्स कपल

जिंदगी के हमसफर जब घूमने

मजबूत होती है रिलेशनशिप

से लेकर साइट सीन तक। लोकल फूड खाना अच्छा लगता है। जब दोनों साथ

तीर्थयात्रा स्पेशल रेल द्वारा
48 वर्षों से अनुभवी श्री रमेश चतुर्वेदी द्वारा
ISO 9001: 2008 प्रमाणित क.

के शौक में भी हमख्याल और हमराही बन जाते हैं, तो उस जिंदगी के लुत्फ को लफ्जों में बयां नहीं किया जा सकता। कपल ट्रैवल ब्लॉगर्स कभी नये डेस्टिनेशन की प्लानिंग साथ-साथ करते हैं, तो कभी रिसर्च और फिर किसी खास योजना पर काम। कैसे जाएंगे? क्या-क्या देखेंगे? संस्कृति को कैसे जानेंगे? कैसे स्थानीय लोगों से मुलाकात करेंगे? वे मिल-बांट कर सुलझा लेते हैं हर मुश्किल। जब निकल पड़ते हैं घुमक्कड़ दो, तो मजबूत हो जाती है दोस्ती की डोर।

यशा माथुर के साथ चलते हैं उनके ख्वाबों की मंजिल की ओर...

खूबसूरत हो प्रकृति का नजारा और साथ में हो लाइफ पार्टनर तो खुशी की सीमा नहीं रहती। लोग साथी के साथ छुट्टियां मनाने जाते हैं, लेकिन जब घूमने का पैशन परवान चढ़ने लगता है, तो अपने अनुभव लिखने की इच्छा भी जाग उठती है और शुरू हो जाती है ब्लॉगिंग, सोशल मीडिया पर भावनाओं और जानकारियों की अभिव्यक्ति। कपल ट्रैवलर्स जब ब्लॉग लिखते हैं, तो उसमें हर दृष्टिकोण से देखी-सुनी सच्चाइयां नजर आती हैं, क्योंकि दो तरह की सोच का मिश्रण जो होता है। इनसे भावी ट्रैवलर्स को भी मिलती है नई सूचनाएं और नई दिशाएं।

हम गिफ्ट नहीं देते, पैसे बचाते हैं : बेंगलुरु में रह रहे रोहित अग्रवाल और शिवानी सूद की शादी को सात साल हुए हैं और उन दोनों ने साथ समय बिताने का बहुत अच्छा बहाना ढूंढ़ लिया। वे मिलकर ट्रैवलिंग की जगह तय करते हैं फिर काम बांट लेते हैं। रोहित फ्लाइट्स, होटल बुकिंग, वीजा आदि का काम देखते हैं और शिवानी रिसर्च के साथ घूमने का समयबद्ध कार्यक्रम बनाती हैं। वे दोनों एक-दूसरे के काम में कोई दखल नहीं देते। रोहित बताते हैं, 'छुट्टी पर जाने से पहले हमारी बातें शुरू हो जाती हैं कि कहां जाना है? कैसे जाना है? हमारा हर घंटे का कार्यक्रम तय होता है। उससे हम ज्यादा चीजें कर पाते हैं। हम सुबह जल्दी दिन शुरू करते हैं। भीड़ भी नहीं मिलती और फोटोज भी अच्छे मिलते हैं। सनराइज के समय रोशनी अच्छी होती है और हम हर जगह पर सनराइज कैप्चर करते हैं।' घूमने के लिए पैसे और छुट्टियां बचाना इस जोड़े के लिए सबसे बड़ा टास्क होता है। इसका हल कैसे निकाला उन्होंने। इस बारे में रोहित कहते हैं, 'हम एक-दूसरे को गिफ्ट नहीं दिलवाते हैं, बल्कि उस पैसे को ट्रैवल के लिए बचा लेते हैं। मुझे याद नहीं कि मैंने शिवानी को आखिरी गिफ्ट कब दिया था। मेरे और शिवानी के पैरेंट्स भोपाल में हैं। हम छुट्टी लेकर घर नहीं जाते, बल्कि उन्हें यहां बुला लेते हैं। हमारी छुट्टियां बच जाती हैं। हमारी 95 प्रतिशत छुट्टियां घूमने में ही खर्च होती हैं।' अमेजन में फुलटाइम जॉब और ट्रैवलिंग के साथ रोहित प्रोफेशनल फोटोशूट भी करते हैं और शिवानी हेल्दी बेकिंग करती हैं। ये भी उनके शौक हैं। रोहित के मुताबिक, खुद का पैशन होना जरूरी है। थोड़ा लाइफस्टाइल मैनेज कर लो तो सब मैनेज हो जाता है।

स्थापत्य व संस्कृतियों को जानना है पसंद : गार्गी और मनीष कुमार झा स्कूल में साथ पढ़ते थे। इंजीनियरिंग कॉलेज में भी साथ-साथ रहे। चार साल हुए हैं शादी को। शुरू में तो वे वैसे ही घूमते, लेकिन बाद में जब फोटोग्राफी भी सीख ली तो महसूस किया कि जो जगहें वे देखते हैं, उनका इतिहास और आर्किटेक्चर उन्हें आकर्षित करता है। तब उन्होंने ब्लॉग लिखना शुरू किया और रिसर्च करके घूमने जाने लगे, ताकि जो जगहें मशहूर नहीं हैं, उनको भी एक्सप्लोर किया जा सके। तीन साल से ब्लॉगिंग चल रही है उनकी। शादी के पांच महीने बाद ही उन्होंने कैमरा खरीद लिया था। कहती हैं गार्गी, 'हम दोनों को आर्किटेक्चर पसंद है, संस्कृतियों को जानना पसंद है। हम भारत के ग्रामीण अंचलों को पसंद करते हैं। मैं रिसर्च और लिखने का काम करती हूं। ट्रैवल के समय नोट्स लिखती हूं। सोशल मीडिया ज्यादातर मनीष ही देखते हैं। गार्गी और मनीष ने तीन साल पहले एक प्रोजेक्ट शुरू किया है, 'बिहार बियॉन्ड इमेजिनेशन'। इसके बारे में गार्गी कहती हैं, 'बिहार में घूमने के नाम पर लोग नालंदा और बोध गया बोल कर चुप हो जाते हैं, लेकिन हजारों जगहें हैं वहां घूमने के लिए। हमने बिहार को चार सर्किट में बांटा है और हर साल 20 दिन में एक सर्किट पूरा करते हैं। तीन तो पूरे हो चुके हैं और अगले साल चौथा भी पूरा कर लेंगे। हम बताएंगे कि बिहार में इतिहास किस कदर जीवंत है।'

जॉब छोड़ आए ब्लॉगिंग में : सेंडी-विजय बचपन से अपने माता-पिता के साथ घूमते थे। शादी के बाद भी उन्होंने इसे जारी रखा। उनकी शादी को 15 साल हो गए हैं। वे दोनों मल्टीनेशनल कंपनी में काम करते थे और जब भी छुट्टी मिलती, घूमने निकल जाते। इसी बीच सेंडी ने फेसबुक पेज बनाया और ट्रैवल स्टोरीज लिखने लगीं। वहां जब काफी लोग इंटरैक्ट करने लगे तो उन्हें बहुत अच्छा लगने लगा और सेंडी ने नौकरी छोड़कर ब्लॉगिंग करना शुरू कर दिया। वे बताती हैं, 'जब लोग हमें बुलाने लगे और काम ज्यादा होने लगा, तब विजय ने भी जॉब छोड़ दी और अब हम साथ में फुलटाइम ट्रैवल ब्लॉगिंग करते हैं। अब तक करीब 16 देश जा चुके हैं। अपना देश पूरा घूम चुके हैं। हम चाहते हैं कि ज्यादा से ज्यादा लोग हमारे अनुभव जानें। कोशिश कर रहे हैं कि अपने ब्लॉग के द्वारा सस्टेनेबल टूरिज्म और रिस्पॉन्सिबल टूरिज्म को बढ़ावा दें।'

घूमने के शौक ने ही जोड़ा हमें : अहमदाबाद के रिषभ

के साथ देख रहे होते हैं तो रिलेशनशिप और मजबूत होती है। यात्रा दिलचस्प रहती है। हम दोनों एक ही स्कूल में थे। एक-दूसरे को पंद्रह साल से जानते हैं। पांच साल पहले हमने ट्रैवलिंग शुरू की। तब हमने नई गाड़ी ली थी तो वीकएंड पर और बेंगलुरु के आस-पास निकल जाते थे। धीरे-धीरे यही चीज बढ़ती गई। हम दोनों को मजा आने लगा। हम एंजॉय करते गए। हमारी पसंद एक जैसी ही है। खाने

के साथ ट्रैवल करते हैं तो बहुत कंफर्टेबल होते हैं। हम दोनों अमेजन में जॉब करते हैं। शिवानी मार्केटिंग में हैं और मैं बिजनेस डेवलपमेंट में हूं। लोग हमसे पूछते हैं कि तुम पैसे कैसे बचाते हो? तुम अमीर हो क्या? तो मैंने ब्लॉग में लिखा कि यात्रा के लिए और यात्राओं में पैसे कैसे बचा सकते हैं? छुट्टियां कैसे बचा सकते हैं?

रोहित अग्रवाल

दट्रैवलरलैंस (रोहित अग्रवाल-शिवानी सूद)

छोटी बेटी संग साल में 15 देश घूमे

अपनी छह महीने की छोटी-सी बच्ची को लेकर सर्दी में स्विट्जरलैंड घूमे रश्मि पंडित और चालुक्य मोहनराज फिर इटली के लिए एक यादगार ट्रिप पर निकल गए। एक साल होते-होते 15 देश देख लिए उन्होंने। एक ही इंजीनियरिंग कॉलेज से हैं दोनों, लेकिन वहां कभी नहीं मिले। प्लेसमेंट एक ही कंपनी में हुआ और तिरुवनंतपुरम में ट्रेनिंग के दौरान मुलाकात हुई। फिर दोनों की मुंबई में पोस्टिंग हुई, दोस्ती हुई और हुई घूमने की शुरुआत। शादी के दस साल बिता चुकीं रश्मि पंडित बताती हैं, 'जब भी मुंबई में बारिश होती थी, तो हम ट्रेकिंग के लिए निकल जाते। मैंने प्रेग्नेंसी में जॉब छोड़ दी थी। इसी बीच कंपनी ने चालुक्य को एक प्रोजेक्ट के लिए स्विट्जरलैंड जाने को कहा। हमने सोचा कि बेटी छोटी है, तो हम स्विट्जरलैंड चले गए। हम चार महीने के लिए गए थे, तो हमने इसका बेहतर इस्तेमाल करने के लिए घूमने की बात सोची। जब गए थे, तो बहुत बर्फ थी, लेकिन हमने स्विट्जरलैंड एक्सप्लोर किया। फिर रोड से इटली गए, ताकि गाड़ी में हम बच्ची को बेहतर तरीके से संभाल सकें। प्रोजेक्ट का समय बढ़ा और हम 18 महीने वहां रहे। इस बीच 15 से ज्यादा देश देख लिए। यहां आने के बाद हम फिर ईस्ट यूरोप घूमने गए, लेकिन अब बच्ची स्कूल जाने लगी है, तो उसकी छुट्टियों के हिसाब से ट्रैवल प्लान करते हैं। इन दिनों देश की सब जगहें देख रहे हैं।'

तिरूचिरापल्ली, तिरूपति, चैन्नई, मल्लिकार्जुन 25 दिसम्बर
मकर संक्रांति स्नान 11 दिन गंगासागर, पुरी, वाराणसी, प्रयाग 10 जनवरी
10 दिन तिरूपति, कन्याकुमारी, मदुरै, रामेश्वरम्, मल्लिकार्जुन 16 फरवरी
10 दिन कामाख्या, शिलांग, दार्जिलिंग, गंगटोक 20 फरवरी
15 दिन अयोध्या, चित्रकूट, काठमाण्डू, वाराणसी, गया, गंगासागर, पुरी, इलाहाबाद 18 फरवरी
2 x 2 बस द्वारा - रात्री विश्राम - डबल बेडरूम - 10 दिन
उदयपुर, अहमदाबाद, द्वारका, सोमनाथ, दीव (मिनीगोवा), पुष्कर 24 दिसम्बर
6 दिन हवाई जहाज द्वारा श्रीलंका यात्रा 15 फरवरी
Head Office जय शिवशंकर तीर्थयात्रा क० (हिण्डौन सिटी) जयपुर 0141-2504511, 2504101, 9414034101
(दिल्ली-9899863822, 9664405841) (लखनऊ-9664405847, 9415368153) (आशीष : लखनऊ -9695774411) (गोरखपुर-9335496740) (इलाहाबाद-9415368153), (बरेली-9997812737), (झांसी-9415113723, 8299084865) (पालमपुर (कांगड़ा)-9805681991)

चाहिए एडवेंचर और नेचर

विजय को एडवेंचर ट्रैवल अच्छा लगता है। मुझे प्रकृति के पास जाना अच्छा लगता है। हम दोनों संस्कृतियों को समझना पसंद करते हैं। इसी हिसाब से हम योजना बना लेते हैं। हम परिवार में घूमते हैं, तो बहुत अच्छा रहता है। बेटे को छुट्टी में ही साथ ले जा पाते हैं। हमने तीन साल पहले ब्लॉग शुरू किया। सोशल मीडिया विजय देखते हैं, बाकी के काम मैं देखती हूं। लिखते हम दोनों ही हैं, लेकिन वीडियोज और उनकी एडिटिंग विजय करते हैं। सेंडी–विजय के नाम से ही हम जाने जाते हैं।

सेंडी
वोयेजर (सेंडी-विजय)

और निराली शाह की अरेंज मैरिज हुई है। एक-दूसरे को जानने के लिए जब पहली बार मिले तो उन्हें पता चला कि उन दोनों में कुछ भी एक-सा नहीं है, बस एक ही चीज कॉमन थी कि दोनों को ही घूमने का बड़ा शौक था। यह एक ही चीज उन्हें जोड़ रही थी। अपनी कहानी बताते हुए रिषभ कहते हैं, 'हम दोनों के शौक अलग हैं। मुझे समुद्र के किनारे पसंद हैं तो उसे पहाड़। मुझे लोगों से मिलना, उनसे बातचीत करना, उनकी कहानियां सुनना अच्छा लगता है, तो निराली को किसी बगीचे, तलाब या झरने के पास सुकून से बैठना अच्छा लगता है। संस्कृति के बारे में निराली बहुत अच्छी तरह से बात करती हैं। मैं फूडी हूं, मुझे नई वैरायटीज ट्राई करना अच्छा लगता है। हम वेजिटेरियन हैं और इसी के बारे में लिखते हैं। मैं स्थानीय खाने के बारे में लिखता हूं। जगह के बारे में हम मिलकर लिखते हैं। अपने-अपने शौक के हिसाब से हम रिसर्च करते हैं, इसलिए दोनों साथ मिलकर ही चीजें फाइनल करते हैं।' हंसते हैं रिषभ कि कैमरे के पीछे मैं ज्यादा रहता हूं और कैमरे के आगे वह। निराली स्कूल में पढ़ाती हैं और रिषभ अपने फैमिली बिजनेस में हैं। वे करीब पांच साल से घूम रहे हैं। दस के करीब देश घूमे हैं। लगभग पूरा भारत कवर किया है। बस उत्तर-पूर्व के कुछ इलाके बाकी हैं।

दिल्ली • उत्तर प्रदेश • मध्य प्रदेश • हरियाणा • उत्तराखंड • बिहार • झारखंड • पंजाब • जम्मू-कश्मीर • हिमाचल प्रदेश • पश्चिम बंगाल से प्रकाशित